डॉ. शरद कुमार जैन
निदेशक
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान
जलविज्ञान भवन
रूड़की – 247 667 (उत्तराखंड)

निदेशक की कलम से.....

प्रिय पाठकों, मुझे यह कहते हुए सुखद अनुभूति हो रही है कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान इस बार भी हिंदी दिवस के पुनीत अवसर पर विगत 24 वर्षों से निरन्तर प्रकाशित हो रही अपनी वार्षिक गृह पत्रिका ''प्रवाहिनी'' के 25वें अंक का प्रकाशन कर रहा है। इस पत्रिका में संस्थान के ही नहीं अपितु विभागेत्तर लेखकों की रचनाओं को भी स्थान दिया गया है। यह प्रयास रहता है कि इस पत्रिका में संकलित लेखों को भाषा और साहित्य संबंधी विषयों तक ही सीमित न रखा जाए। इसी क्रम को जारी रखते हुए प्रस्तुत अंक में कहानी, कविताएं, ज्ञान–विज्ञान आदि विषयों से जुड़ी मनोरंजक, प्रेरणादायक तथा उपयोगी रचनाओं को प्रकाशित किया गया है। रचनाओं की भाषा सरल व सुबोध रखने का प्रयास किया गया है जिससे कि हर वर्ग का पाठक इससे लाभान्वित हो सके। आशा है यह अंक सुधी पाठकों को रोचक एवं उपयोगी लगेगा।

प्रसन्नता की बात है कि वैज्ञानिक प्रकृति की कार्य संस्कृति वाला यह संस्थान आज अपने शोध एवं विकास कार्यों में अग्रणी भूमिका निभाने के साथ–साथ राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भी निरंतर आगे बढ़ रहा है। संस्थान के पदाधिकारियों की हिंदी लेखन रूचि में निरंतर वृद्धि हो रही है और वे प्रशासनिक कार्यों में ही नहीं अपितु वैज्ञानिक कार्यों में भी हिंदी का प्रयोग कर रहे हैं।

किसी राष्ट्र की प्रगति में उसकी भाषा और संस्कृति का महत्वपूर्ण योगदान होता है। यूं तो एक ही देश में कई भाषाएं बोली जाती हैं परन्तु उनमें एक भाषा ऐसी होती है जो देश भर के विभिन्न भाषा–भाषी लोगों को एक–दूसरे के निकट लाती है। इस भाषा को देश के अधिकतर लोग बोल–समझ सकते हैं। हिंदी हमारी संस्कृति की संवाहिका है। यह हमारी राष्ट्रभाषा के साथ–साथ राष्ट्रीय एकता की भाषा, देश की संपर्क भाषा और जनभाषा भी है। इन्हीं सब गुणों के कारण ही हिंदी राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित हुई। हिंदी एक ऐसी ही भाषा है जो पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण से लेकर विदेशों तक में बोली व समझी जाती है। अतः हिंदी आज अखिल भारतीय भाषा के साथ–साथ विश्व के अनेक देशों में बोली जाने के कारण अन्तरराष्ट्रीय भाषा भी बनती जा रही है। मैं इस पत्रिका के माध्यम से सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से आग्रह करना चाहूंगा कि वे राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार एवं कार्यान्वयन में बढ़–चढ़कर योगदान दें ताकि सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी खूब फलती–फूलती रहे।

मैं पत्रिका के संपादन एवं प्रकाशन कार्यों से जुड़े सभी पदाधिकारियों को बधाई देता हूं। समस्त प्रबुद्ध लेखकगण धन्यवाद के पात्र हैं। मैं पत्रिका की अपार सफलता की मंगल कामना करता हूं।

शरद जैन

(शरद कुमार जैन)